Q. प्लासी व बक्सर के युद्धों का तुलनात्मक मूल्यांकन ?

प्लासी व बक्सर के युद्धों का भारतीय इतिहास में अंग्रेजों के शासन स्थापना की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान है. इन युद्धों के परिणामस्वरूप सम्पूर्ण बंगाल पर अंग्रेजी राज्य कायम हो गया और धीरे-धीरे इन्हें अपने साम्राज्य के विस्तार करने का आधार मिल गया और एक दिन सम्पूर्ण भारत अंग्रेजों के अधीन हो गया.

इन दोनों युद्धों का तुलनात्मक वर्णन निम्नलिखित है :-

(1) नैतिक महत्व → प्लासी के युद्ध ने यह एकदम स्पष्ट कर दिया कि बंगाल का राजनीतिक जीवन पूर्णतया विषाक्त था। अंग्रेजों को यह समझने देर नहीं लगी कि बंगाल का असंतुष्ट अमीर वर्ग नवाब के

विनाश में किसी भी शक्ति के साथ सहयोग कर सकता है। इस प्रकार 1757 ई० से अँगरेजों की व्यापारिक उन्नति और प्रादेशिक प्रगति के क्षेत्र में एक नए युग का सूत्रपात हुआ। प्लासी युद्ध में नैतिकता अनैतिकता की बात नहीं थी। इसमें प्रभाव और कुशलता का बोलबाला था।

(2) साम्राज्य-स्थापना संबंधी महत्व → प्लासी युद्ध के पश्चात् अँगरेजों का प्रभाव भारत में स्थापित हो गया, लेकिन अभी उनके दिमाग में साम्राज्य-स्थापना की बात नहीं आई थी और यदि यह भावना आई भी थी तो साम्राज्य-स्थापना का मार्ग अभी संकटों से भरा था। इसके कुछ ही दिनों बाद बक्सर की लड़ाई हुई और इसके परिणामस्वरूप भारत में अँगरेजी साम्राज्य की स्थापना का मार्ग सुगम हो गया।

(3) राजनीतिक महत्व → प्लासी युद्ध के बाद बंगाल की राजनीति में कोई परिवर्तन हो गया था। उस समय अँगरेज अपना प्रभुत्व कायम करने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार की चेष्टाएँ कर रहे थे। कभी वे मीर जाफर को नवाब बनाते, कभी मीर कासिम को। 22 अक्टूबर 1764 ई० को बक्सर के मैदान में यानी पहले

के बीच लड़ाई हो गई। इस लड़ाई में अंग्रेजों को ऐसी विजय मिली जिसकी कल्पना नहीं की गई थी। इसके फलस्वरूप भारत में ब्रिटिश शासन की नींव मजबूत हो गई और इतनी मजबूत हो गई कि संसार की कोई भी शक्ति उसे नहीं हिला सकती थी। अतः बक्सर की लड़ाई प्लासी के युद्ध से कहीं अधिक महत्वपूर्ण एवं निर्णायक थी।

(4) युद्ध की दृष्टि से महत्व → प्लासी युद्ध में अंग्रेजों ने षड्यंत्र तथा धोखेबाजी से विजय प्राप्त की थी। पर बक्सर के युद्ध में न तो किसी षड्यंत्र का सहारा लिया गया था और न धोखेबाजी का ही। इस युद्ध के लिए दोनों पक्षों ने पूरी तैयारी की थी। इसमें अंग्रेजों ने अपने रणकौशल का परिचय दिया था। इससे यह स्पष्ट हो गया कि भारतीय सैन्य संगठन त्रुटियों से परिपूर्ण है। इसने भारतीय सैन्य संगठन के खोखलेपन को स्पष्ट कर दिया।

(5) बक्सर के युद्ध का व्यापक महत्व → इस युद्ध में उत्तरी भारत एक तरफ था तथा अंग्रेज व्यापारी दूसरी तरफ।

यह युद्ध एक असाधारण घटना थी क्योंकि इसमें केवल बंगाल का नवाब पराजित नहीं हुआ वरन अवध का नवाब तथा दिल्ली का सम्राट भी पराजित हुए। इस पराजय से इन दोनों (तीनों) शक्तियों का सितारा सदा के लिए अस्त हो गया और अंग्रेजों के लिए रास्ता एकदम साफ हो गया। मैलिसन ने ठीक ही लिखा है, "बक्सर की विजय ने अंग्रेजी सीमा को इलाहाबाद तक बढ़ा दिया।"

निष्कर्ष → इस प्रकार, यदि हम प्लासी युद्ध और बक्सर युद्ध दोनों का तुलनात्मक अध्ययन करते हैं तो स्पष्ट हो जाता है कि बक्सर का युद्ध प्लासी के युद्ध से कहीं अधिक महत्वपूर्ण था। वस्तुतः प्लासी के युद्ध ने जिस क्रिया को आरंभ किया, बक्सर के युद्ध ने उसे पूरा कर दिया। इस संबंध में सर जेम्स स्टीफेन्स ने लिखा है, "अंग्रेजी प्रभुत्व की दृष्टि से बक्सर के युद्ध का प्लासी के युद्ध की अपेक्षा अधिक महत्व है।"